

>

Title: Need to prevent the exploitation of labourers in un-organised sectors of the country.

**कुमारी सरोज पाण्डेय (दुर्ग) :** अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान हमारे देश के उन मूल शिल्पकारों की ओर दिलाना चाहती हूँ, जो आज भी शोषित और पीड़ित हैं। ये वे शिल्पकार हैं, जो हमारे विकास में अपनी सहभागिता बहुत तेजी के साथ निभाते हैं। मैं अपने देश के रिश्तावाले, कुली, घरों में काम करने वाली बाइयों आदि के बारे में बात कर रही हूँ। मैं इस विषय को यहां इसलिए उठाना चाहती हूँ क्योंकि आज तक उनके लिए कोई भी एकीकृत योजना नहीं बनी है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान उनकी मूलभूत सुविधाओं की ओर भी आकर्षित करना चाहती हूँ, क्योंकि ये जो काम करते हैं और उन्हें उनके काम के एवज में जो रोजी मिलनी चाहिए, वह भी पर्याप्त नहीं हो पाती है, न तो उनकी शिक्षा-दीक्षा की कोई व्यवस्था हो पाती है और न उनके बच्चे किसी सुनहरी योजना की ओर देख पाते हैं। होता केवल यह है कि वे अपने जीवन के किसी तरह से समाप्त होने का इंतजार करते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे ये मूल शिल्पकार, जिन्हें हम अपने देश में असंगठित मजदूरों के रूप में पहचानते हैं, इन असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए सरकार तत्काल एक एकीकृत योजना बनाये और उनकी शिक्षा-दीक्षा सहित उनके सुनहरे भविष्य की योजना के लिए कुछ कार्य करे। यह वर्तमान समय की आवश्यकता है और यदि हम अपने देश में विकास की बात करते हैं तो हमें उन्हें साथ लेकर चलना ही पड़ेगा।

आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ।

**अध्यक्ष महोदया :**

श्री चंदूलाल साहू को कुमारी सरोज पाण्डेय द्वारा उठाये गये विषय से सम्बद्ध किया जाता है।